दसवाँ दीक्षांत समारोह

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

24 दिसम्बर, 2016

श्री गुलाब चन्द कटारिया
माननीय गृह मंत्री, राजस्थान सरकार

उद्‌बोधन

माननीय श्री कल्याण सिंह जी, राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, माननीय श्री प्रभुलाल सैनी, कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार, डॉ. उमा शंकर शर्मा, कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, डॉ. अजय शंकर पाण्डे, ओ.एस.डी., माननीय राज्यपाल, राजस्थान, प्रबंधन मंडल व शैक्षणिक परिषद् के माननीय सदस्य, अधिष्ठाता एवं निदेशकगण, कुलसचिव, शिक्षक एवं कर्मचारीगण, आमंत्रित अतिथिगण, मीडिया के प्रतिनिधि, विद्यार्थीगण व उनके अभिभावक, अन्य समस्त महानुभावों, भाइयों एवं बहनों।

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दसवें दीक्षान्त समारोह में सम्मिलित होकर मुझे हर्ष हो रहा है और गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। यह मेरे लिए गौरव की बात है कि 1999 में मेवाड़ आँचल में स्थापित यह विश्वविद्यालय युवाओं को कृषि के क्षेत्र में शिक्षा व अनुसंधान की अलख जगाकर राज्य एवं देश के किसानों के चहुंमुखी विकास के लिए सतत् कार्यशील है।

सर्वप्रथम मैं आज के दीक्षान्त समारोह में डिग्री, स्वर्ण पदक एवं पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ, जिन्होनें इसके लिए कड़ी मेहनत की एवं सफलता प्राप्त की।

विश्वविद्यालय की स्थापना के एक दशक के काल में वर्ष 2013 में राष्ट्रीय स्तर पर महिन्द्रा समृद्धि कृषि विश्वविद्यालय का पुरस्कार प्राप्त करना मेवाड़ आँचल तथा राजस्थान के लिए गौरव की बात है। मैं कुलपति, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों को इसके लिए

बधाई देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि आने वाले समय में यहाँ के विद्यार्थी, वैज्ञानिक एवं कर्मचारीगण इस विश्वविद्यालय को ओर नई ऊँचाईयों पर ले जायेंगे।

राजस्थान के कुल सकल घरेलू उत्पाद का 31 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र से आता है। राजस्थान में लगभग 60 प्रतिशत आबादी से अधिक लोगों की आजीविका कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों पर निर्भर है। उन्नत कृषि तकनीकों का विकास, कृषि के ढांचागत विकास कार्यक्रम तथा किसानों की सजगता से राजस्थान में कृषि उत्पादन में सतत् वृद्धि हुई है। बागवानी फसलों, प्लास्टीकल्चर, सिंचाई प्रबंधन, जैविक कृषि, फार्म मशीनीकरण, संरक्षित खेती, गुणवत्तापूर्ण आदान उत्पादन, डेयरी, अन्न उत्पादन, मुर्गीपालन, पशुधन उत्पादन, मछली पालन, कृषि प्रसंस्करण, नवीनीकरण उर्जा, कृषक महिला सशक्तिकरण, उन्नत कृषि फार्म प्रबन्धन आदि क्षेत्रों में नई तकनीकों के विकास एवं प्रसार के कारण राज्य में कृषि विकास को एक नई गति मिली है।

मेरा मानना है कि कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान का मूलभूत उद्देश्य ''सभी के लिए हमेशा के लिए भोजन उपलब्ध कराना'' (Food for All and For Ever) है। इसी उद्धेश्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में अनेक विश्वविद्यालय, संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा लघु एवं वृहत् स्तर पर कार्य किये जा रहे हैं।

यहाँ एक बिन्दु पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि भोजन उत्पादन तभी तक सतत् रूप से होगा जब तक उत्पादक की आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित होगी। पिछले कई वर्षों में मुझे किसानों, अनुसंधान वैज्ञानिकों, शिक्षकों एवं छात्रों से मिलने और उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी हासिल करने का अवसर मिला है। हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना होगा ताकि कृषि की नवीनतम तकनीकों का लाभ दक्षिणी राजस्थान के प्रत्येक किसान तक पहुंच सके। इस प्रयास में हमें आप सबके निरन्तर सहयोग की आवश्यकता है। अतः मेरा यहाँ उपस्थित सभी विद्यार्थियों एवं वैज्ञानिकों से अनुरोध है कि किसान तथा किसान की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कार्य करें, जिससे किसानों की रूचि कृषि की ओर बनी रहे तथा नई पीढ़ी भी अधिक रूचि से कृषि क्षेत्र में कार्य करें।

विगत वर्षों में इस विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा संस्थानों द्वारा कृषि उत्पादन और आय बढ़ाने के लिए विभिन्न तकनीकों का विकास कर उन्हें किसानों के यहाँ

आजमाया गया है। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों का सामना करने के लिए मेवाड़ क्षेत्र के सभी जिलों के लिए जिलावार आकस्मिक जलवायु कृषि कार्य योजनाएं तैयार की गई। साथ ही इस विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा जैविक खेती पर नेट वर्किंग प्रोजेक्ट प्राप्त हुआ है ओर इस प्रोजेक्ट में मृदा स्वास्थ्य संबंधी कार्य विशेष रूप से किए जा रहे हैं जो इस क्षेत्र के किसानों के लिए अहम हैं।

पिछले 25 वर्षों में नवीन कृषि तकनीकों के प्रसार तथा राज्य सरकार की नवाचार कृषि योजनाओं के माध्यम से राजस्थान तथा मेवाड़ आंचल में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। बेहतर तकनीकों के उपयोग एवं साधन–सुविधाओं के विकास से ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा जीवनशैली में संरचनात्मक परिवर्तन आये हैं। इसमें कृषि विश्वविद्यालयों एवं राज्य सरकार की योजनाओं की अहम् भूमिका रही है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सूरतगढ़, राजस्थान से ही 19 फरवरी, 2015 को देश में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का शुभारम्भ किया और सभी देशवासियों को आवहान् किया कि भूमि को सुजलाम–सुफलाम बनाने के लिए मिट्‌टी का पोषण आवश्यक है। उन्होंने 'स्वस्थ्य धरा–खेत हरा' का नारा दिया। यह योजना बहुत ही अहम योजना है और सभी किसानों को इस योजना से जुड़ कर मृदा स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन के लिए कार्य करना चाहिए।

समय के साथ कृषि के क्षेत्र ने भी बदलावों को अंगीकार किया है। कृषि में उत्पादकता के उद्धेश्य के रूप में आज हमारे सामने एक चुनौती है। कृषि उत्पादन के साथ–साथ किसान परिवार की आजीविका के टिकाऊपन के लिए विभिन्न पहलुओं का कृषि के साथ समन्वय करना आज के समय की मुख्य्य चुनौती है।

ट्रैक्टर, पेस्टीसाइड़, उर्वरक, मोटर साइकिल एवं मोबाइल ने ग्रामीण जीवन शैली पर गहरा प्रभाव डाला है, जिससे कृषि को अब बिजनेस के रूप में देखा जाने लगा है और उसी दृष्टि से उत्पादक को सजग एवं तकनीकी सुदृढ़ होना आवश्यक है। कृषि ज्ञान के साथ–साथ कौशल विकास एवं व्यवसाय प्रबन्धन के बारे में सटीक जानकारी किसानों तक पहुँचाना आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

इसी दृष्टि से राज्य सरकार तथा कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा कृषि में नवाचार, कौशल विकास तथा डिजिटलीकरण पर जोर दिया जा रहा है। आज का प्रशिक्षित युवा इन्टरनेट एवं सूचना के ज्ञान में काफी आगे है। प्रशिक्षित युवाओं को कृषि क्षेत्र में जुड़ने से दूर–दराज के गाँवों में आदान, उत्पाद, बाजार तथा ग्राहक सम्बन्धित जानकारियों का आदान–प्रदान और अधिक सुगम होगा। इससे किसानों का और अधिक लाभ होगा एवं लागत में कमी आयेगी।

यह सही है कि विज्ञान के विकास से जीवन सुगम एवं सुखमय होता है। लेकिन विज्ञान के साथ–साथ मानवीय एवं पर्यावरणीय मूल्यों का जीवन की सुखपूर्ण निरन्तरता तथा भावी पीढ़ियों की उन्नति के लिए आवश्यक है। हमें विज्ञान को अपनाकर मानव जीवन को सुदृढ़ करना है न कि अति उत्साही होकर असंतुलित तकनीकी प्रयोग कर मानव जीवन को असंतोष तथा विनाश के कगार पर धकेल दें।

आज वातावरण एवं मानव कल्याणकारी कृषि का नारा सारे विश्व में गूंज रहा है। हमें 'शुभ लाभ' की कृषि एवं वैज्ञानिक तकनीकों को बढ़ावा देना चाहिए। राजस्थान के लोगों की जीवनशैली, संस्कृति एवं पर्यावरण मूलक रही है। अतः ग्रामीण आधारित कृषि व्यवस्था को सुदृढ़ करने वाली तकनीकों एवं योजनाओं पर हमारा फोकस होना चाहिए।

सीमित संसाधन तथा वन आधारित जीवनशैली में पशुधन का विशेष महत्व है। हमारे किसान भाई सदियों से पशुधन को परिवार का अभिन्न रूप मानते आये है। आज हमने इनको मात्र व्यवसाय का रूप दे दिया है। इस भावना को बदलना होगा।

जलवायु परिवर्तन एवं बदलते मौसम में वानिकी, चरागाह एवं पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था पर जोर देकर कार्बन स्थिरिकरण के उद्धेश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस कृषि विश्वविद्यालय द्वारा खाद्य सुरक्षा तथा जलवायु स्थिरिकरण, मौसम बदलाव, जैविक कृषि, जैव नियंत्रण, बायोगैस, ऊर्जा नवीनीकरण तथा मशीनीकरण जैसे कम लागत वाले तथा अधिक प्रासंगिक विषयों पर कार्य किये जा रहे है, जो निश्चित रूप से आज के समय की महत्ती आवश्यकता है। इससे आने वाले समय में वाटर एवं कार्बन ट्रेडिंग, ऊर्जा प्रबन्धन, ग्रीन वातावरण, ग्रीन अर्थव्यवस्था जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर समझ विकसित होगी और किसानों तक ग्लोबल ज्ञान के प्रसार में मदद मिलेगी।

कृषि का क्षेत्र उद्योग, सेवा तथा व्यवसायों से बिल्कुल भिन्न है। जल, जमीन तथा जलवायु का प्रभाव अन्य व्यवसायों की अपेक्षा कृषि में सर्वाधिक होने से कृषि कार्यों को निपटाना एवं इसके उद्धेश्य प्राप्त करना एक चुनौती है। राजस्थान के किसानों ने इस चुनौती को एक उत्सव के रूप में स्वीकार किया है। देशी एवं परम्परागत तकनीक से जमीन, जल एवं मौसम प्रबन्धन की तकनीकें बिना विज्ञान के सहयोग से हमारे पूर्वज किसानों ने अपने अनुभव से विकसित की है। मेवाड़ क्षेत्र पर आधारित चक्रपाणि द्वारा रचित विश्ववल्लभ ग्रंथ में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों की तकनीकों एवं प्रबन्धन के अनुभवों का संकलन है। आज विज्ञान की नई तकनीकों की सहायता से युवा पीढ़ी को इन तकनीकों का विस्तृत अध्ययन कर इनके पेटेन्ट तथा वृहत स्तर पर प्रचार–प्रसार का कार्य करना चाहिए। इससे नये अनुसंधान में समय एवं श्रम की बचत होगी।

किसी भी क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति तभी संभव है जब समय एवं परिस्थितियों के अनुसार उसमें परिवर्तन आये। कृषि क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं हैं। हमें व्यावसायिक कृषि शिक्षा पर जोर देना चाहिए। अनुभवजन्य प्रशिक्षण तथा सीखो और कमाओ जैसे पहलुओं का कृषि शिक्षा में अधिक से अधिक समन्वय जरूरी है। इससे युवा पीढ़ी में कौशल विकास होगा और हमारा कृषि तन्त्र शिक्षकों को ओर अधिक संकल्प एवं समर्पण करना होगा। जीवन शैली बदल रही है और हमारे देश में इसका व्यापक प्रभाव दृष्टिगाचर हो रहा है। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को संस्कृति तथा जीवन मूल्यों की शिक्षा के अधि कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। मनुष्य होने का अर्थ है जिम्मेदार होना, यह महसूस करना कि यदि हर आदमी अपने हिस्से की एक ईंट रखता है, तो वह विश्व निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान करता है।

इस अवसर पर दीक्षा ले रहे विद्यार्थियों को मैं कहना चाहूँगा कि जिंदगी में जो अनिवार्य है, आंखे उसे देख नहीं पाती उसे सिर्फ दिल से ही देखा जा सकता है। आप खेत, किसान एवं हमारे पूर्वजों की संस्कृति का दिल से ध्यान कर इस देश के कृषि विकास एवं देश निर्माण में अपना योगदान दें तभी सच्ची शिक्षा का उद्देश्य प्राप्त होगा।

जय हिन्द